IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

निजी क्षेत्र में कार्यरत ग्रामीण तथा शहरी महिला कर्मचारियों के कार्य संतोष का अध्ययन

डॉ अनामिका लिंका ,

प्रिंसिपल एजय मां तारा B.Ed कॉलेज एवेस्ट बंगाल

प्रस्तुत अध्ययन मेरठ जनपद के निजी क्षेत्र में कार्यरत ग्रामीण तथा शहरी महिला कर्मचारियों की कार्य संतोष का अध्ययन है ।अध्ययन हेतु मेरठ के कालीन उद्योग से महिला कर्मचारियों का चयन किया गया । जिसमें से 50 ग्रामीण क्षेत्र की एवं 50 शहरी क्षेत्र की महिलाओं का चयन किया गया । संग्रह हेतु प्रयोज्य पर डॉ टी0आर0 एवं डॉ अमर सिंह द्वारा निर्मित भकार्य संतोष मापनी" का उपयोग किया गया सांख्यिकी विश्लेषण के लिए क्रांतिक अनुपात का उपयोग किया गया जिसमें ग्रामीण एवं शहरी महिला कर्मचारियों के कार्य संतोष में सार्थक अंतर नहीं पाया गया ।

प्रस्तावना.

किसी भी उद्योग की उत्पादन क्षमता उस उद्योग में कार्यरत कर्मचारियों पर निर्भर करती है।जिस उद्योग में कर्मचारियों का कार्य संतोष उच्च होता है वह उद्योग तीव्र गति से विकास करते हैं तथा जिस उद्योग के कर्मचारियों का कार्य संतोष निम्न होता है वह उद्योग अत्याधिक विकास नहीं कर पाते हैं। औद्योगिक मनोविज्ञान एवं संगठनात्मक मनोविज्ञान में कार्य संतोष को एक महत्वपूर्ण कारक बताया गया है क्योंकि किसी भी उद्योग की सफलता की प्रमुख कुंजी यह है कि उसकी कर्मचारियों में पर्याप्त कार्य संतुष्टि हो। कार्यसंतोष मानसिक आनंदित स्थिति है जो एक कार्य स्वीकृति के परिणाम स्वरूप प्राप्त होती है ।यह एक सामान्य मनोवृति होती है यह मनोवृति किन्हीं दो कर्मचारियों की एक ही कार्य परिस्थिति में एक समान होगा ऐसा नहीं कहा जा सकता क्योंकि दोनों कर्मचारियों की अपनी.अपनी मनोवृति अलग अलग हो सकती है कार्य संतोष उद्योग का सर्वोपरि लक्ष्य है ।यह उद्योग का साधन एवं साध्य दोनों ही माना जा सकता है। पारिश्रमिकए पर्यवेक्षकए रोजगार की निरंतरता ए कार्य की भौतिक एवं मनोवैज्ञानिक अवस्था एप्रोन्नति के अवसरए सामाजिक संबंधए शिकायतों की सुनवाईए नियोजक द्वारा पक्षपात रहित एवं न्याय संगत व्यवहार के साथ ही साथए कर्मचारी की आयए स्वास्थ्यए एवं मनोवृति ए आकांक्षा का स्तरए पारिवारिक स्थितिए सामाजिक प्रतिष्ठाए तथा सभी संबंधित विशिष्ट तत्व कार्य संतोष को प्रभावित करते हैं।

वेश एच0 एम0 ने तर्क दिया है.कार्य संतोष एक अभिव्यक्ति है लेकिन उसमें कुछ बिंदु भी बताए हैं जो शोधकर्ता को स्पष्ट रूप से परिलक्षित होने चाहिए वह संज्ञानात्मक मूल्यांकन के उद्देश्य हैं संवेगए विश्वास और व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

लॉक ;1976द्धके अनुसार ."कार्य संतुष्टि से तात्पर्य अपने कार्य या कार्य अनुभूतियों के मूल्यांकन से उत्पन्न सुखमय धनात्मक संवेग अवस्था से होता है। भ

ब्रूम ;1964द्ध. भ व्यक्ति वर्तमान समय में किस कार्य में संलग्न है उसकी प्रभावशाली उन्मुक्तता ही उनका ही कार्य संतोष है । भ

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कार्य संतोष किसी कर्मचारी में अंतर्निहित उसकी मनोवृतियों का परिणाम होता है औद्योगिक संगठनों पर कर्मचारियों के कार्य संतोष का व्यापक प्रभाव पड़ता है। यदि किसी संगठन में ज्यादातर कर्मचारी कार्य संतोष का अनुभव करते हैं तो इस संगठन में उत्पादन अधिक होता है एदुर्घटनाएं कम होती हैं एमनोबल अधिक रहता है और कार्य में संलग्नता बढ़ जाती है ।

' Arvind Prasad and Arun Kumar (2009) . ने 300 कार्यरत महिलाओं के कार्य संतुष्टि का अध्ययन किया। अध्ययन में अधिकतर महिलाएं अपने कार्य में संतुष्ट पाई गई ।

' ्रकमी न्वंकींलं;2008द्ध ने पब्लिक एवं प्राइवेट सेक्टर की 200 कर्मचारियों के कार्य संतुष्टि एवं कमिटमेंट के बीच अध्ययन किया और अध्ययन में पाया कि पब्लिक सेक्टर में कार्यरत कर्मचारियों में कार्य संतुष्टि अधिक पाई गई जबकि प्राइवेट सेक्टर में कार्यरत कर्मचारियों में संतुष्टि की मात्रा कम पाई गई।

*Steven S.Lui.Hang-Yue Ngo.Anita Wing Ngar Tsang(2010)प्रोफेशनल अकाउंट पर अध्ययन किया । अध्ययन से प्रदर्शित होता है कि भूमिका द्वंद से संबंध होने की प्रवृत्ति होने के साथ निम्न कार्य संतोष एवं कार्य स्थान को विशेषतारू छोड़ देने की प्रवृत्ति पाई गई।

*Serpil Aytak &Sahil Dusun(2011)मी सार्वजनिक अस्पताल टर्की मैं कार्यरत 118 स्वास्थ्य कार्यकर्ता पर हिंसा निवारण जलवायु का कार्य स्थान पर कई आयामों को लेकर कार्य संतोष पर प्रभाव का अध्ययन कियाए अध्ययन में कार्य संतोष पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। जिससे कार्य संतोष की मात्रा उच्च पाई गई ।

*Meeusen V.CH.(2011)ने नर्सों पर अध्ययन किया । अध्ययन में पाया गया कि कार्य संतोष एक सकारात्मक भूमिका निभाता है। कार्य परिवेश में एवं रचनात्मक कार्य करने में कार्य संतोष की मात्रा उच्च पाई गई।

समस्या का कथन .

प्रस्तुत शोध समस्या जनपद मेरठ के कालीन उद्योग में कार्यरत ग्रामीण एवं शहरी महिला कर्मचारियों के कार्य संतोष को ज्ञात करने के लिए संपादित की गई है ।

इस समस्या का प्रारूप निम्न है .

उद्देश्य ..

'मेरठ जिले के कालीन व्यवसाय के कारखाने में कार्यरत ग्रामीण तथा शहरी महिलाओं में उनके कार्य के प्रति संतोष एवं असंतोष की स्थिति ज्ञात करना।

'भविष्य को ध्यान में रखते हुए ग्रामीण एवं शहरी महिला कर्मचारियों द्वारा उत्पादन स्तर को बनाए रखने के लिए भविष्यवाणी संभव होगी।

उपकल्पनाएं ..

'शहरी महिलाओं एवं ग्रामीण महिलाओं के कार्य संतोष में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया जाएगा।

'ग्रामीण महिलाओं के 20 .30 वर्ष तथा 30 .40 वर्ष आयु वर्ग में कार्य संतोष में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया जाएगा।

'शहरी महिलाओं के 20 . 30 वर्ष तथा 30. 40 वर्ष आयु वर्ग में कार्य संतोष में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया जाएगा।

शोध विधि .

प्रस्तुत शोध कार्य विवरणात्मकअनुसंधान के अंतर्गत सर्वेक्षण प्रकार का अनुसंधान है। इस प्रकार के अनुसंधान में वर्तमान में चल रही घटनाओं अथवा वस्तु स्थिति का अध्ययन सर्वेक्षण के आधार पर प्राप्त आंकड़ों के द्वारा किया गया है।

प्रतिदर्श .

प्रस्तुत शोध के अंतर्गत निजी क्षेत्र के काली उद्योगों में कार्यरत 50 ग्रामीण तथा 50 शहरी क्षेत्र की महिलाओं का याद्दच्छिक विधि से चयन किया गया जो मेरठ जिले के कालीन व्यवसाय के कारखानों से ली गई हैं। इन कर्मीको का चयन रसायन प्रिंटिंगए मशीनरीए प्लास्टिक रंगाई एछपाई आदि लघु उद्योगों से लिया गया है।

प्रयुक्त उपकरण तथा सांख्यिकी विश्लेषण .

ग्रामीण एवं शहरी महिला कर्मचारियों के कार्य संतोष के मापन के लिए डॉ टी0 आर0 शर्मा एवं डॉ अमर सिंह ;पटियालाद्धद्वारा विकसित भ्कार्य संतोष मापनी”का उपयोग किया गया है। जिनमें कुल प्रश्नों की संख्या 30 है जिसमें धनात्मक तथा नकारात्मक दोनों प्रकार के कथन हैं । मापनी की विश्वसनीयता 0ण्978 है एवं वैधता गुणांक 0ण्743पाया गया। सांख्यिकी विश्लेषण हेतु मध्यमानए प्रमाणिक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात का प्रयोग किया गया।

परिणाम एवं व्याख्या .

मेरठ जनपद के कालीन व्यवसाय में कार्यरत ग्रामीण तथा शहरी महिला कर्मचारियों से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर सांख्यिकी विश्लेषण किया जो कि निम्नलिखित है .

तालिका .1

ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं के कार्य संतोष का मध्यमान मानक विचलन एवं अंतर की सार्थकता.

क्रम संख्या	समूह	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर
1.	ग्रामीण महिला	61ण्6	4ण्45	0ण्074	छण्ैण्
2.	शहरी महिला	61ण्7	7ण्1		

शहरी एवं ग्रामीण महिला कर्मचारियों के बीच कार्य संतोष का अध्ययन किया गया। ग्रामीण महिलाओं का मध्यमान 61ण्6 पाया गया एवं मानक विचलन 4ण्45 है एतथा शहरी महिलाओं का मध्यमान 61ण्7 एवं मानक विचलन 7ण्1 है।दोनों समूह के क्रांतिक अनुपात का मान 0ण्074 है जो सार्थकता स्तर के 0ण्05 के मान से कम है। परिणाम प्रदर्शित करते हैं कि दोनों समूह में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

तालिका संख्या .2

ग्रामीण महिलाओं के 20 .30 वर्ष तथा 30 .40 वर्ष के बीच कार्य संतोष का मध्यमान मानक विचलन एवं अंतर की सार्थकता

क्रम संख्या	समूह	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर
1.	आयु 20 . 30 वर्ष प्रतिदर्श;25द्ध	58ण्5	6ण्25	3ण्495	ढ0ण्01
2.	आयु 30 . 40 वर्ष प्रतिदर्श; 25 द्ध	62ण्8	6ण्11		

उपयुक्त सारणी में ग्रामीण महिलाओं में 20 .30 वर्ष आयु वर्ग का मध्यमान 58 ण्5 एवं मानक विचलन 6ण्25 है जबकि ग्रामीण महिलाओं में 30 .40 वर्ष आयु वर्ग का मध्यमान 62ण्8 एवं मानक 6ण्11 प्राप्त हुआ है दोनों समूह के सार्थकता का अंतर ;क्रांतिक अनुपातद्ध का मान 3ण्495 पाया गया। जो सार्थकता 001 स्तर पर सार्थक पाया गया। प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट है कि 20. 30 वर्ष आयु वर्ग की अपेक्षा 30 .40 वर्ष आयु में कार्य के प्रति संतोष की मात्रा अत्याधिक है।

तालिका संख्या .3

शहरी महिलाओं के 20 से 30 वर्ष तथा 30 से 40 वर्ष के कार्य संतोष का मध्यमान मानक विचलन एवं सार्थकता का अंतर .

क्रम संख्या	समूह	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर
1.	आयु 20 . 30 वर्ष प्रतिदर्श ;25द्ध	62ण्5	6ण्85	0ण्769	छण्ैण्
2.	आयु 30. 40 वर्ष प्रतिदर्श;25द्ध	61ण्5	6ण्30		

उपयुक्त सारणी में शहरी महिलाओं में 20 से 30 वर्ष आयु वर्ग का मध्यमान 62ण्5 एवं मानक विचलन 6ण् 85 है जबकि शहरी महिलाओं में 30 से 40 वर्ष आयु वर्ग का मध्यमान 61ण्5 एवं मानक विचलन 6ण् 30 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों में सार्थकता का अंतर ;क्रांतिक अनुपात का मानद्ध 0ण् 769 पाया गया जो सार्थकता 0ण्05 स्तर के मान से कम है । परिणाम प्रदर्शित करते हैं कि दोनों समूह में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

निष्कर्ष

प्राप्त परिणामों के आधार पर यह स्पष्ट है कि ग्रामीण एवं शहरी महिला कर्मचारियों के कार्य संतोष का तुलनात्मक अध्ययन करने पर उनके बीच सार्थक अंतर नहीं पाया गया । दोनों समूहों के क्रांतिक अनुपात का मान सार्थकता स्तर से कम है अतः कहा जा सकता है कि ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं के बीच कार्य संतोष में कोई भिन्नता नहीं है।

जबकि विभिन्न आयु वर्ग में सार्थक अंतर पाया गया । ग्रामीण क्षेत्र की महिला कर्मी 20 से 30 वर्ष तथा 30 से 40 वर्ष के आयु वर्ग में कार्य संतोष का अंतर पाया गया। दोनों आयु वर्गों का तुलनात्मक अध्ययन करने में क्रांतिक अनुपात का मान सार्थकता स्तर से अधिक है। अतः दोनों के कार्य संतोष में अंतर है ।

शहरी क्षेत्र की महिला कर्मिक में 20 से 30 वर्ष तथा 30 से 40 वर्ष के कार्य संतोष में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गयाए दोनों आयु वर्ग में कार्य संतोष का तुलनात्मक अध्ययन में अनुपात का मान क्रांतिक अनुपात का मान सार्थकता स्तर कम है। निष्कर्ष में पाया गया कि दोनों समूहों के कार्य संतोष में कोई अंतर नहीं है।

परीक्षा परिणाम एवं व्यक्तिगत वार्तालाप से कुछ महिला कर्मी को में सहयोग की भावना प्रबल पाई गई जबकि कुछ महिला कर्मियों ने इस कार्य के प्रति उनका रुझान नहीं पाया गया।

उपयुक्त परिणाम एवं निष्कर्षों के आधार पर कहा जा सकता है कि यह अध्ययन औद्योगिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में कार्य के अनुप्रयोग के कर्मचारियों के कार्य संतोष को ध्यान में रखते हुए औद्योगिक विकास की योजनाओं के क्रियान्वयन में सहायक सिद्ध होगा।।

संदर्भ

- Aytac serpil and Durson Sahil (2011), the effect on job satisfaction and the stress of the perceptions of violence climate in the workplace,Mediterranean Journal of social sciences.DOI: 10.5901 /Mjss.2011,V2 n3 P 70 ISSN 2039-2117,2011 MCSER.
- Locke,1976 Cited in Brief ,A.P. and Weiss, H.M. (2001) Organizational behaviour effect in the workplace .Annual Review of Physcology 53 279-307,P.282.
- Meeusen V.Ch., Van Dam. K; Brown Mahony C; Zundert .A.A J; Knape .H.TA (2011) Understanding nurse anesthetists' Intention to leave their job;How Burnout and job satisfaction mediate the impact of personality and workplace characteristics .Health care management review,36,155.
- Prasad ,Arvind and Arun Kumar (2009) A study of some background Variables of job Satisfaction a money working woman University of Bihar IIJ SSR/Val.3 NO.1 June 2009 PP.32-35.
- Steven S.Lui ,Hue-yue Ngo ,Anta wing-Nagar Isang (2010). Interrale Conflict as a Predictor of job satisfaction and propensity to leave Journal of managerial Psychology,Vol.16 No.6 2001 ,PP.469484.
- Upadhyay ,Awadhesh (2008) ,A Study of job satisfaction and commitment among workers of Public and private sector organization ,U.P. college Varanasi IIJ SSR/Val. II No.II November 2008 PP 15-18.
- Weiss,H.M. (2002) Deconstrectional Satisfaction Separating evaluations ,beliefs and affective experiences . Human resources management Review,12,173-194.